वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बौद्ध कालीन शिक्षा एवं शांति शिक्षा का अध्ययन

नीलम
रिसर्च स्कोलर (पीएच.डी)
चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय. मेरठ
यु. पी. (भारत)

सारांश
वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बौद्धकालीन शिक्षा के बहुत से उद्देश्यों को समाहित करके ही, शिक्षा प्रणाली को परिपूर्ण बनाया जा सकता है। बौद्ध धर्म व गौतम बुद्ध के उपदेश बौद्ध शिक्षा प्रणाली के मुख्य केन्द्र बिन्दु थे। परन्तु बौद्ध पाठ्यक्रम में समाहित अहिंसा, मानववाद, विश्व बन्धुत्व विश्वशांति बसुधैव कुटुम्बकम, प्रजातांत्रिक संगठन की झलक ही इसे अन्य शिक्षा व्यवस्था से अलग बनाती है। शोधकर्ता ने देखा कि छात्रों व अध्यापकों का त्याग पूर्ण जीवन एक ऐसे तत्व हैं जो जो आज की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कहीं ना कहीं परिलक्षित होते हैं। आज छात्रों के अंदर धन के प्रति लोलुपता वैभव जीवन जीने की इच्छा ही संयुक्त परिवेश में रहने की आदत अनुशासन की अध्यक्षता जैसी विकास उत्पन्न हुए हैं जिससे की शिक्षा प्रणाली में कहीं ना कहीं बदलाव आया है इसीलिए बौद्ध शिक्षा प्रणाली में कुछ समस्याएं आई है अतः यह बहुत ही आवश्यक है अगर हम शिक्षा प्रणाली में बौद्ध शिक्षा को समाहित किया जाए यह आवश्यक है कि छात्रों में इन समस्याओं को दूर करने के लिए उन छात्रों के अंदर नैतिक विकास व्यक्तित्व विकास और जीविका की तैयारी जैसे प्रासंगिक उद्देश्यों को लेकर ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे आधुनिक समाज में भी वह पुरातन मूल्यों से विमुख ना हो और सभ्य समाज का निर्माण कर सकें और भविष्य में भारत की कल आधार बन सके जिससे कि आगे चलकर हमारे देश का तो विकास हो ही साथ ही साथ हमारे समाज का हमारी शिक्षा का हमारी परंपरा का भी एक अच्छा विकास हो सके **आज के परिदृश्य में सम्पूर्ण विश्व नवीन चुनौतियों से घिरा हुआ है, जिसमें परमाणु युद्ध से लेकर, सांस्कृतिक विलोपन तक का खतरा बन** हुआ है

१. प्रस्तावना

यहां एक यूनिवर्सल सत्य है कि शिक्षा हमारा पाठ्यक्रम का किसी भी व्यक्ति का समाज का राष्ट्र का विकास की संजीवनी है इसीलिए शिक्षा पर व्यक्ति को विशेष ध्यान देना चाहिए शिक्षा का संबंध न केवल साक्षरता से ही नहीं बल्कि शिक्षा व्यक्ति में चेतना आत्मविश्वास आत्मनिर्भरता और उत्तरदायित्व की भावना का विकास करती है 2500 स्कूल गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म को व्यवस्थित किया बौद्ध धर्म भारतीय जीवन की आंगिक विकास का परिणाम था ना कि किसी बाहर वृत्ति का परिणाम इसीलिए बौद्ध धर्म की शिक्षा का दर्शन बौद्ध धर्म की शिक्षा व्यवस्था को हमारे शिक्षा प्रणाली में समाहित किया जाना बहुत ही आवश्यक है बौद्ध शिक्षा प्रणाली में बहुत सी ऐसी शिक्षा व्यवस्था है जो कि आज की शिक्षा व्यवस्था में विलुप्त होती नजर आ गई है जिसको की अपनाना चाहिए इसीलिए बौद्ध कालीन शिक्षा काफी हद तक वैदिक शिक्षा के समान ही थी और यह देखा गया है कि जिस प्रकार से यज्ञ वैदिक काल में ज्ञान तथा शिक्षा के केंद्र में थी थी उसी तरह बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था में बिहार एवं मठों में प्रचलित शिक्षा केंद्र में थी दोनों में यह समानताएं देखने को मिली है बौद्ध धर्म में निर्माण पर अधिक जोर दिया गया निर्माण से अभिप्राय उस स्थिति से था जिसमें सभी लालसा समाप्त हो जाती है मुंह से कोई मतलब नहीं है निर्माण की प्राप्ति पर मान जीवन में भी संभव हो सकती है क्यों नहीं हो सकती मोह ममता अगर छोड़ दी जाए तो हमें निर्माण की प्राप्ति अवश्य ही संभव है

इसीलिए बुद्धि काल की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य जीवन में निर्माण निर्माण प्राप्त करने का उपाय जानना था दूसरे शब्दों में बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को ऐसा आचरण सिखाना था जिससे उनके मस्तिष्क की स्थिति व शांति प्राप्त हो सके इस व्यापक पाठ्यक्रम को स्वयं में समायोजित किया तथा समाज की एक विशेष वर्ग का शिक्षण वर्ष ज्ञान प्राप्ति का रास्ता खोला और वैदिक कालीन आनुवंशिकी एकाधिकार को समाप्त कर दिया तथा जनमानस की शिक्षा का महत्व समझाया और धीरे-धीरे शिक्षा को सफल बनाने का प्रयास किया जो कि आज की वर्तमान युग में पूर्णता प्रासंगिक है बौद्ध कालीन शिक्षा में शांति शिक्षा के लिए व्यापक स्तर पर पाठ्यक्रम त्याग कर दिया जो कि आज के टाइम के लिए बहुत ही आवश्यक है यदि बौद्ध दर्शन को ध्यान से देखें तो हम पाते हैं कि उन्होंने हाथी शिवादित्य को त्याग कर मध्यम मार्ग पर चलने का विचार दिया जिसमें जनमानस और लोक कल्याणकारी तत्वों का समावेश हो बुद्ध के अनुसार जन्नती संयोग वियोग आदि सभी दुख में है कृष्णा या लालसा संपूर्ण दुखों का कारण है कृष्णा के विरोध से दुखी निवृत्ति हो सकती है ।

२. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिक समय में हमारा देश विश्व कई ऐसी समस्याओं से जूझ रहा है जो मानवता एवं संस्कृति के लिए काफी हानिकारक है अगर हमने स्कूल नहीं बचाया तो हमारी मानव मानवता एवं संस्कृति दोनों की ही काफी हानि पहुंच सकती है जिसके लिए हमारे सभी कि यह दायित्व बनता है कि हमारे शिक्षा व्यवस्था में बहुत ही जल्द से जल्दी परिवर्तन किए जाएं जिसमें आतंकवाद परमाणु युद्ध क्षेत्रीय असंतुलन रोजगारी मानव अधिकार अतिक्रमण लिंगभेद जैसी प्रमुख मुद्दे शामिल है अगर हम कायदे से देखें तो अगर हम इन्हीं मुद्दों पर सही पूर्वक कार्य किया जाए तो हमारे देश समाज में अवश्य ही बदलाव आना चाहिए इन्हीं समस्याओं को खत्म करने में शांति शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जा रही है इसीलिए शांति शिक्षा को भी हमारे पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए और इस को किन-किन माध्यमों एवं आधार से जोड़ कर दिया जाए वर्तमान में इसकी आवश्यकता महसूस की जा रही है यह भी विचार किया जा सकता है अगर शांति शिक्षा को बालक के अंदर शुरुआत से ही शांति शिक्षा का महत्व और महत्व के बारे में उसके उद्देश्यों के बारे में बताया जाए तो यह बहुत ही कारगर सिद्ध होगा जब हम विश्व शांति एवं सद्भावना के विकास की बात करते हैं और छात्रों को विश्व नागरिकता के लिए तैयार करते हैं तो कहीं नहीं कहीं छात्रों को आर्थिक सामाजिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों की जानकारी प्रदान होनी चाहिए वह हम सबका दायित्व है कि व्यक्ति के बारे में जानकारी दी जाए जो कि मैं समझता हूं कि शांति शिक्षा और हमें बालक के अंदर पाठ्यक्रम के माध्यम से ही डाली जा सकती है इसीलिए विश्व शांति एवं सद्भाव में शांति शिक्षा के शैक्षणिक कार्यक्रमों एवं उपयुक्त देशों के माध्यम से ही पारंपरिक शिक्षा के क्रम में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है जिसमें आत्म सर्वभूतेषु वासुदेव कुटुंबकम एवं गांधी जी द्वारा सत्य अहिंसा तथा मानव द्वारा स्थापित शांति सद्भावना मानवतावाद जैसे मूल्यों का समावेश हो जिससे कि हमारे समाज में देश समस्या उत्पन्न ना हो समस्याओं का समाधान हो सके

३. बौद्ध कालीन शिक्षा में शांति शिक्षा के अवयव

बौद्ध आत्मिक शांति के दमन के लिए एक ऐसा मार्ग बताया और यह आदेश दिया कि यह सांसारिक कार्य कारणों में ही दुख है और इसका निराकरण भी संभव है इसीलिए उन्होंने चार आर्य सत्य का निरीक्षण किया जिसमें कहा है कि यदि दुख है तो दुख का कारण भी होगा दुख का उपचार है दुख से मुक्ति है इन्हीं दुखों का विरोध करने के लिए उन्होंने आठ आगे सकते या अष्टांगिक मार्ग बताएं जो आज सार्थक सिद्ध हो रहे हैं हम इन्हीं मूल्यों को अपने पाठ्यक्रम में अपना सही है आज वर्तमान में जिस पाठ्यक्रम की हम बात करते हैं वह बुद्ध कालीन शिक्षा से ही लिए गए हैं और आज भी यदि इन मूल्यों को जीवन में समाहित कर ले तो सब दुख का निवारण हो सकता है बुधनी दुख निवारण मार्ग में शील समाधि और प्रज्ञा को निवारण का मार्ग बताया है सबसे पहले सम्यक दृष्टि की बात कहते हैं सम्यक दृष्टि अपने दृष्टिकोण को ठीक रखना चाहिए क्योंकि हमारा दृष्टिकोण जैसा होगा वैसा ही हमारा काम होगा तो उसका परिणाम भी वैसा ही निकलता है अब दूसरी बात

करें सम्यक संकल्प संकल्प संकल्प विचार आ सकती ड्रेस तथा अहिंसा से मुक्त हो गलत विचार एवं धारणाएं हमारे अंदर ना अपनी पाए हमारे विचार पवित्र और शुद्ध हो टी सी बात करें सम्यक वर्क हमें अप्रिय वचनों को बोलने से बचना चाहिए बोल चाल ठीक नहीं रहने पर मनुष्य स्वयं तो दुख आता है और दुख हो दूसरों को भी देता है अपनों का परित्याग ही सम्यक है अब हम हिंदू की तरफ बढ़ते हैं चौथा बिंदु हमारा है समानता हमारे कार्य को दान दया सत्य अहिंसा आदि सत्कर्म का अनुसरण ही मानते हैं हम आगे बढ़ते हैं आजीविका हमारी आजीविका के साधन ठीक होने चाहिए के नियमों के अनुकूल आजीविका के अनुसरण करने को कहा जाता है सही दिशा में होनी चाहिए एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए सम्यक स्मृति– मिथ्या भाव को त्याग कर मन, वचन तथा कर्मों को याद रखना और सच्ची धारणा रखना ही सम्यक् स्मृति है। सम्यक समाधि– मन अथवा चित्त की एकाग्रता को सम्यक समाधि कहते हैं। इन्हें ही आष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। इस आष्टांगिक मार्ग से ही मोक्ष (निर्वाण) के सम्बन्ध में शिक्षा द`ने हेतु संघ बनाये गये बौद्धकालीन शिक्षा इन्हीं संघों तक सीमित थी तथा पूरी तरह प्रवृत्यात्मक थी।

४. शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करते हुये, उसे मानवीय एवं शांति शिक्षा के व्यापक आधारों का अध्ययन करना।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में विश्वशान्ति एवं सद्भाव के सम्बन्ध में सामाजिक कुशलताओं का अध्ययन करना।
3. शांति शिक्षा के पाठ्यक्रमों का व्यापक एवं विस्तारपूर्वक अध्ययन करना।
4. विश्वशांति सद्भाव एवं अन्तर्राष्ट्रीय भावना के विकास में बौद्धकालीन शिक्षा व्यव0स्था एवं वर्तमान शांति शिक्षा कार्यक्रमों का अध्ययन।
5. शांति शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओ ं का अध्ययन करना।

५. बौद्ध शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता

वैदिक युगीन शिक्षा की बहुत ही विशेषताएं आज भी प्रासंगिक है ठीक उसी तरह बौद्ध कालीन शिक्षा के प्रमुख लक्षण क्योंकि हमारे आधुनिक पाठ्यक्रम आधुनिक समय में उपाय हैं उपयोगी से हुए हैं वर्तमान शिक्षा में यदि क्षेत्र का विकास व्यक्तित्व का विकास तथा जीविका आज भी प्रासंगिक है बनाया जा सकता है मिल सकता है वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विशेष समाहित करके एक बहुत बड़ा परिवर्तन किया जा सकता है बौद्ध शिक्षा प्रणाली के इससे अदानी अर्थात 10 शिक्षा पद आज भी पूर्णता उपयोगी तथा सम्यक है इस दशा देशों का छात्रों के द्वारा यदि पालन किया जाए तो वर्तमान समय की सांप्रदायिक वातावरण भ्रष्टाचार मादक पदार्थों के सेवन झूठ बोलना परनिंदा आदि व्यक्तिगत विचारों से बचा जा सकता है बौद्ध काल में छात्र एवं अध्यापक संबंध भी अपने आप में एक उदाहरण है जिसको आज हमें पुनर्जीवित करना होगा शिक्षा संस्थाओं में आए दिन तक हड़ताल अनुशासनहीनता तथा अध्यापकों के साथ होने वाली अवस्था को बौद्ध शिक्षा के मूल्यों से कम किया जा सकता है कि सभी बौद्ध शिक्षा के मूल्यों को हमारी आज की शिक्षा व्यवस्था में समाहित करने के बाद ही समाप्त हो सकती है इसलिए हमारे पाठ्यक्रम में बौद्ध शिक्षा को सम्मानित करना चाहिए तभी कुछ एक बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है वैभवा चमक-दमक हिंसा से युक्त परिवेश धन्यवाद कारों की लालसा तथा घाव आदेश से परिपूर्ण वातावरण जीवन में वर्तमान जीवन में शिक्षा के तत्व को योगदान कर सकते हैं और भारतीय आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शामिल किए जा सकते हैं

- शिक्षा संस्थाओं का प्रजातांत्रिक संगठन
- छात्रों तथा अध्यापकों का सरल जीवन
- शांति व अहिंसा का अनुसरण
- जनसामान्य शिक्षा
- मानववाद, विश्वबन्धुत्व एवं विश्वशांति की शिक्षा

- व्यवसायिक कुशलता का विकास

६. शांति शिक्षा की वर्तमान में आवश्यकता

शांति शिक्षा के सनदर्भ में हमारे समक्ष तीन प्रश्न उठ खड़े होते हैं।

1 शान्ति शिक्षा क्या है।
2 शान्ति शिक्षा कैसे दी जाये?
3 शान्ति शिक्षा किस लिये दी जाये?

शांति का शाब्दिक अर्थ है शुक्रिया कल्याणकारी अर्थात ऐसी शिक्षा जो व्यक्ति को सुख प्रदान करें और उसके जीवन में कल्याण प्रदान करें ऐसी शिक्षा को जो स्वयं एवं जगत दोनों के लिए कल्याणकारी हो ऐसे स्वतंत्र व्यवस्था स्थापित करती हो उसे शांति शिक्षा कहते हैं जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय की परिकल्पना परिपूर्ण हो अर्थात आता हम यह कह सकते हैं कि शांति शिक्षा शारीरिक बौद्धिक पक्ष से परे जाकर आंतरिक क्षेत्र में आंतरिक चेतना को जागृत करना है आंतरिक चेतना को प्रकाशित करने के लिए अहिंसा सत्य अस्तेय अपरिग्रह आत्म संयम संतोष तक एवं न्याय जैसे नियमों का पालन करना होगा शांति की शिक्षा धार्मिक सहिष्णुता विश्व बंधुत्व की भावना नैतिक मूल्यों के निर्माण सम्मानजनक जीवन यापन भय से मुक्त मानव आदि के लिए आवश्यक दिखाई पड़ती है शांति शिक्षा का आज हमारी वर्तमान दैनिक जीवन में बहुत ही बड़ा योगदान है शांति शिक्षा विश्व शांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है इसीलिए यह प्रश्न की शिक्षा किस लिए दी जाए तो इसका उत्तर मिल जाता है जिसे हम पाते हैं कि संपूर्ण विश्व में चारों तरफ शांत वातावरण छाया हुआ है उसका समाधान है चाहे वह विद्यालय हो घर हो, धार्मिक संस्थायें हो, प्रान्त या राष्ट्र हो, चारों तरफ एक भय अनुशासनहीनता, हिंसा, उग्रता की स्थिति दिखाई देती है जो कहीं न कहीं सहअस्तित्व पूर्ण शांति शिक्षा के माध्यम से कम किया जा सकता है। जिसे अल्वर्ट आइन्स्टीन ने भी कहा है कि 'शांति को बलपूर्वक नहीं रखा जा सकता... यदि बच्चों को युद्ध के लिये शिक्षित किया जा सकता है तो उन्हें शांन्ति के लिए क्यों नहीं शिक्षित किया जा सकता। यदि शैक्षणिक संस्थायें युद्ध की योजनाओं में रूचि ले सकती है। तो वे शान्ति की योजनाओं में रूचि क्यों नहीं ले सकती।'' शान्ति शिक्षा के सैद्धान्तिक स्वरूपों में पाठ्यक्रम को नैतिक शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, मूल्यों की शिक्षा पर विशेष बल देना होगा। व्यवहारिक कार्यक्रमों में हमें कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को पाठ्यक्रम में समावेशित करना होगा।

- साहित्यिक कार्यक्रम– भाषण, वाद, विवाद, निबंध लेखन, स्लोगन लेखन
- सांस्कृतिक कार्यक्रम– कहानी, कथा, नाटक मंचन, कविता पाठ
- वैश्विक शांति मूल्यों का कक्षाओं में प्रदर्शन तथा, शांति दिवस का आयोजन
- शांति विषयक वार्ता, सेमिनार, व कार्यशालाओं का आयोजन
- खेल–कूद प्रतियोगिता
- राष्ट्रीय स्तर पर शांति शिविरों का आयोजन एवं राष्ट्रीय रैली का आयोजन
- पत्र, पत्रिकाओं और पुस्तकालयों में शांति शिक्षा से संबंधित साहित्यों का अधिकाधिक समावेशन

७. शांति शिक्षा का क्षेत्र

शांति शिक्षा को विभिन्न स्तरों पर लागू किया जा सकता है।

1. स्वयं सक्रिय स्तर
2. विद्यालयी स्तर
3. राष्ट्रीय स्तर
4. वैश्विक स्तर

1. स्वयं सक्रिय स्तर पर

समाज में परिवार प्राथमिक पाठशाला होती है और परिवार के सदस्य के रूप में सबसे पहली शिक्षा यहीं से प्रारम्भ होती है। ऐसे में परिवार द्वारा अपनाये गये उच्च आदर्श, व्यवहार एवं पारिवारिक

वातावरण भी बालकों के व्यवहार को निर्धारित करता है। परिवार में होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों रीति रिवाजों से बालक कई प्रकार की प्रक्रियाओं और मूल्यों को ग्रहण करता है। जिससे कई प्रकार क गुण, कौशलों का विकास अपने आप होते है। जिससे वह स्वयं सक्रिय रहते है। इसलिए व्यक्तिगत अर्थात स्वयं के सर्वांगीण विकास हेतु परिवार का कर्तव्य है कि बच्चों के समक्ष आदर्श व्यवहार एवं वातावरण का निर्माण करें जिससे सकारात्मक विचार, निर्णय क्षमता, ढूढ़निश्चय, सहानुभूति पूर्वक रहना जैसे विचार पल्लवित एवं पुलकित होंगे।

2. विद्यालयी स्तर

शांति को बढ़ावा देने में विद्यालयी स्तर सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। चूंकि बालक विद्यालय पूर्व ही बहुत से मूल्यों एवं कौशलों को अर्जित करता है। और विद्यालयी वातावरण में उसे परिलक्षित करता है। ऐसे में विद्यालय के शांतमय वातावरण सहयोगी एवं सहचर्य पूर्ण वातावरण विद्यार्थी के गुणों में उत्तरोत्तर वृद्धि करता है। अतः शिक्षकों को पढ़ाते समय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर से शांति के विषय में छात्रों के मध्य चर्चा करते रहनी चाहिये और उसके बारे में अवगत करायेंगे तो आसानी से शांति को विद्यालयों एवं विद्यार्थियों में स्थापित किया जा सकता है। शांति को बढ़ाने में अध्यापक सशक्त अभिकर्ता के रूप में कार्य करता है। जिसमें वह अध्ययन, अध्यापन, एवं प्रत्यक्ष कार्यों में कुशल पद्धति अपनाकर विद्यालय में सामंजस्ययुक्त एवं शांतिपूर्ण माहौल बना सकता है। जिससे विद्यार्थियों में उचित मूल्यों, सामाजिक सामंजस्य, न्यायशीलता का विकास होगा और वह समाज में शांति दूत बनकर उभरेंगे।

3. राष्ट्रीय स्तर

वर्तमान समय में शिक्षा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी देश का भविष्य वहां के नागरिक संसाधन निर्धारित करते है। ऐसी स्थिति में शांति शिक्षा और भी महतवपूर्ण हो जाती है। जिससे विद्यार्थियों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का विकास किया जा सके और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा मिल सके। राष्ट्रीय स्तर पर शांति शिक्षा द्वारा कुछ प्रमुख बातों को निस्तारित किया जा सकता है।

1. सभी धर्मों का सम्मान एवं इसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करेगा।
2. अहिंसा के सर्वांग मूल्यों को अपनाना।
3. पर्यावरण एवं प्रकृति की रक्षा करना।
4. अपनी संस्कृति में मूल्यपरक बिन्दुओं को महत्व देना।

4. वैश्विक स्तर

इस भूमण्डलीकरण के दौर में संचार प्रौद्योगिकी ने विचारों, सूचनाओं एवं ज्ञान को किसी एक देश तक सीमित न रखते हुये इसे विश्वव्यापी बना दिया है। और यह सब शिक्षा के माध्यम से हुआ है। आज विश्व में हर देश की यही संकल्पना है कि वे अपने युवाओं को विश्व मानव एवं उच्च संसाधन में बदल सकें ताकि वह स्वयं एवं राष्ट्र का सकल विकास कर सकें जिसके लिये यह आवश्यक है कि उन्हें शांति शिक्षा के माध्यम से वैविश्क मुद्दों का समझाया जाये और उसके प्रति जागरूकता पैदा की जाये। जिनमें कुछ प्रमुख निम्नवत है–

1 वैश्विक संस्कृति का ज्ञान प्रदान करना।
2 सामुदायिकता एवं सहअस्तित्व के भाव को निहित करना।
3 मानव अधिकारों की समझ विकसित करना।
4 मानवीय मूल्यों एवं संस्कारों को समझाना।
5 असमानता को दूर करने के लिए तत्पर करना।
6 भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद जैसे ज्वलंत मुद्दों को समझाना।
7 लिंग असमानता एवं नस्लवाद को रोकने के लिये जागरूक करना।
8 आधुनिक युग में युद्ध के बढ़ते खतरे को रोकने के लिये वैश्विक समझ विकसित करना।

८. निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आज विश्व में जहां भी युद्ध हुए हैं, युद्ध चल रहे हैं, अशान्ति का वातावरण है या असुरक्षा की भावना है। वहीं पर शांति शिक्षा की आवश्यकता है। और शांति शिक्षा के व्यापक स्वरूप की हमें अपने शैक्षिक पाठ्यक्रमों में समावेशित करने की आवश्यकता है।

जिसका अथाह आधार हमारे आंगन में ही पले बढ़े हुये बौद्ध धर्म की शिक्षाओं में मिलता है जिसमें यह स्पष्ट रूप से विदित है कि मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य ही शांति प्राप्ति है अतः शांति शिक्षा को वर्तमान परिदृश्य में सबसे जरूरी आवश्यकता के रूप में देखा जा रहा है, जिसके लिये शांति शिक्षा एवं बौद्ध कालीन शैक्षिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में समाहित करने की आवश्यकता है प्रस्तुत शोध पत्र में यह प्रयास किया गया है कि बौद्धकालीन शिक्षा में शांति शिक्षा को आधार प्रदान करने वाले तत्वों को पाठ्यक्रम में शामिल कर इसे मानव विकास में लगाया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.गांधी, इन्दिरा (1981). पीस स्टडी फार स्कूल्स, नेशनल हेराल्ड 20, 1981
2.फाडिया, बी. एल. (2009). अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, आगरा : साहित्य प्रकाशन
3.पाण्डेय, वी. के. (2009), प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन
4.द्विवेदी राहुल, जे. डी. सिंह (2007). जैन एवं बौद्ध एक समग्र अध्ययन, इलाहाबाद : यूथ कम्पटीशन टाइम्स
5.यूनेस्को (1972). लर्निंग टू द वर्ल्ड ऑफ एजुकेशन टू डे, एण्ड टूमारो, पेरिस, पृ. 197
6.गौतम, मुकेश कुमार (2018), विश्वशांति एवं सद्भाव हेतु शिक्षा, इनोवेशन द रिसर्च कान्सेप्ट, कानपुर, संस्करण 3, अंक–1, फरवरी पृष्ठ 198–152
7.धिंग्रा, राखी गिरराज (2018). शांति शिक्षा का पाठ्यक्रम में एकीकरण, इण्टरनेशनल जनरल ऑफ एडवान्स एजुकेशन रिसर्च, दिल्ली, संस्करण–3, अंक–2, मार्च, पृ.82–87